अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2020) दिनांक : 21.12.2020

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भिक्षु दृष्ठांत–40

प्र. 1 किन्हीं तेरह प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 13

(क) हेम जी को अस्खलित और व्यवस्थित व्याख्यान कंठस्थ नहीं है वे रचना करते जाते हैं और व्याख्यान देते जाते हैं। वेणीरामजी के इस कथन पर भिक्षु स्वामी ने क्या कहा?

(ख) वेणीराम जी के अनुसार किससे पात्र को नहीं रंगना चाहिए?

(ग) 'लगता है वेणा संघ से अलग होगा' यह बात स्वामी भीखण जी ने किससे कही?

(घ) स्वामी भीखण जी बीमार साधुओं के लिए दाल की व्यवस्था किस प्रकार करते थे?

(ङ) हेम जी ने कितने वर्ष के बाद अब्रह्मचर्य सेवन का त्याग किया?

(च) हेम जी स्वामी की दीक्षा कब हुई?

(छ) साधु और साध्वियों की स्खलना और खामी को मिटाने के लिए स्वामी भीखण जी क्या दृष्टान्त देते थे?

(ज) स्वामी भीखण जी ने साधुओं के लिए घृत, दूध, दही, चीनी और 'कड़ाई विगय' की मर्यादा कब और क्यों की?

(झ) स्वामी भीखण जी को महाजन के सिवाय दूसरों को दीक्षा देने में रूचि क्यों नहीं रही?

(ञ) कोटा वाले आचार्य दौलतराम जी सम्प्रदाय के कौन-कौन से साधु स्वामी भीखण जी के संघ में दीक्षित हुए?

(ट) भीखण जी स्वामी ने 'कयरे मग्ग मक्खाया' पाठ का क्या अर्थ बताया?

(ठ) 'हेम जी दीक्षा लेने को तैयार हुए हैं, पर उनमें तम्बाकू का व्यसन है।' इस कथन के प्रत्युत्तर में स्वामी भीखण जी ने क्या कहा?

(ड) भीखण जी स्वामी जब दीक्षा लेने को तैयार हुए तब उनकी बुआ जी ने क्या कहा?

(ढ) प्रताप जी कोठारी के पूछने पर स्वामी भीखण जी ने किस वस्तु पर पद की रचना की?

(ण) अपनी महिमा बढ़ाने वालों की पहचान के लिए स्वामी भीखण जी ने किसका दृष्टांत दिया?

प्र. 2 किन्हीं दो घटना-प्रसंगों को 100 से 150 शब्दों में लिखें– 12

(क) प्रतिकूलता में भी अजेय।

(ख) सच्चा तो मुझे ही किया।

(ग) बड़ा मूर्ख।

(घ) मोक्ष का उपकार करने वाला महान होता है।

(ङ) स्वच्छंदचारी होना श्रेय नहीं।

प्र. 3 किसी एक प्रश्न का विस्तार से उत्तर दीजिए– 15

(क) मान्यता और प्ररूपणा के भेद सम्बन्धी कोई तीन दृष्टांतों को लिखते हुए बताएं कि आचार्य भिक्षु किस प्रकार अपने बुद्धि चातुर्य से इस भेद को स्पष्ट करते थे?

(ख) दृष्टांतों द्वारा बताएं कि संघ के साधुओं में किसी प्रकार का आग्रह होने पर आचार्य भिक्षु किस प्रकार समझाते थे?

महासती सदरारां–15

प्र. 4 किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए– 3

(क) सरदारां के जेठ जैसे ही दीक्षा का आज्ञा-पत्र लिखने को तैयार हुए तब फिर कौन सी अवरोधक स्थिति पैदा हुई?

(ख) छेदोपस्थापनीय चारित्र से क्या तात्पर्य है?

(ग) जयाचार्य ने साध्वी सरदारां जी को साध्वी प्रमुखा के पद पर कब और कहां प्रतिष्ठित किया?

(घ) सरदार सती को नए सिरे से साध्वियों के सिंघाड़ों की व्यवस्था का निर्देश देने के पीछे जयाचार्य की क्या इच्छा थी?

(ङ) जयाचार्य ने सरदार सती को अन्तिम समय में उत्तराध्ययन सूत्र के कौन से दो अध्ययन की गाथाएं सार्थ सुनाई?

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 12

(क) सरदार सती के अग्रगण्य पद पर नियुक्ति पर प्रकाश डालें।

(ख) समर्पण का अभिनव क्रम पर टिप्पणी लिखें।

(ग) सरदार सती की वैराग्य भावना और तपस्या पर प्रकाश डालें।

अनुकम्पा की चौपाई–30

प्र. 6 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 5

(क) 'ममाई' किसे कहते हैं?

(ख) मूला खिलाने में जो मिश्र धर्म बताते हैं आचार्य भिक्षु ने उनकी श्रद्धा को किसके समान बताया है?

(ग) राजा श्रेणिक ने नगरी में ढिंढोरा किन कारणों से पिटवाया?

(घ) आहार, पानी की भिक्षा लाकर कोई साधु संभोगी साधुओं में नहीं बांटता तो उसे किसका पाप लगता है?

(ङ) नौ कोटि की दया का सभा में निरूपण करने वाले को भगवान महावीर ने क्या कहा है?

(च) जीव की हिंसा में धर्म की प्ररूपणा करने वाले का तीसरा महाव्रत किस प्रकार भंग होता है?

(छ) गृहस्थ के काम भोग क्या-क्या हैं?

प्र. 7 छद्मस्थ की क्या पहचान है? भगवान महावीर ने छद्मस्थ अवस्था में क्या चूक की एवम् क्यों की? 10

अथवा

दृष्टांतों द्वारा सिद्ध करें कि मित्र से मित्रता और शत्रु से शत्रुता भावान्तर में चलती जाती है।

प्र. 8 किन्हीं दो पद्यों की सप्रसंग व्याख्या करें– 15

(क) बीसां भेदां रूके कर्म आवता, बारे भेदां हो कटे आगला कर्म।
ए मोक्ष रा मारग पाधरा, छोडा भेला हो सगला पाखंड धर्म।।

(ख) ग्रहस्थ रो न बांछणों जीवणों मरणों, ते वांछे बतायां लागे पाप कर्मों।
राग-धेष रहीत रहिणों निरदावे, एहवो निकेलव श्रीजिण धर्मो।।

(ग) त्रिविधे त्राइ छ काय रा साधु, त्यांरी दया निरंतर राखे जी।
ते छ काय रा पीहर छ काय नें मारयां, धर्म किसे लेखे भाखे जी।।

(घ) यूं कियां जिन धर्म निपजे, तो भगवतं सीखावत आप जी।
वले आज्ञा देता तेहने, वले चोड़े करता आहीज थाप जी।।

भिक्षु वाणी–15

प्र. 9 कोई पांच पद्य लिखें– 15

(क) उणने छोटा.....दिन जाय।।

(ख) आहार पाणी.....उठ जावे।।

(ग) लोही.....किम थायो।।

(घ) उपदेष्टा

(ङ) घर में.....करे गुमांन।।

(च) परिग्रह

(छ) रूंख जिम.....रे कांन।।

(ज) केइ विनीत.....अविनीत।।

(झ) होनहार।